रसखान की कविता में अप्रस्तुत विधान के विविध स्रोत

अमृतेश कुमार मिश्र

कवि रसखान ने सारे अप्रस्तुतों का चयन क्षेत्र पुराण, इतिहास, प्रकृति एवं व्यवहारिक जीवन से लिया है। इन सभी अप्रस्तुतों को उन्होंने रूपक, उपमा, प्रतीक आदि के माध्यम से अपने काव्य में पिरोया है। उनके द्वारा ये सभी अप्रस्तुत चयन बड़ा ही सहज एवं आकर्षक है, क्योंकि ये सभी अप्रस्तुत अनुभूति पर आधारित है। कहीं भी प्रयास से बोझिल नहीं हैं। कृष्ण के सौन्दर्य चित्रण में, विविध लीलाओं में, भक्त मन की आसक्ति के क्षेत्रों में, निष्काम समर्पण में उनका भाव विभोर मन जिन अप्रस्तुतों के द्वारा अपनी उक्ति को आकर्षक एवं प्रेषणीय बनाता है वे ब्रजभूमि की प्रकृति, मानव जीवन के सहज कर्म –व्यापार एवं पौराणिक धरातल से आये हैं! पौराणिक धरातल से आगत अप्रस्तुत इस दिशा में उनकी गहरी आस्था व्यक्त करते है जहाँ साम्प्रदायिक संकीर्णता का नामो निशान मिट जाता है। बस रह जाता है कृष्ण का सौन्दर्य, उनका आकर्षक लीला और उसमें से झांकता उनका विराट व्यक्तित्व।